प्रिंसिपल भगवती राजपूत द्वारा लकड़ी चोरी मामला

अब उल्टा चोर कोतवाल को डांटे !

फ़रीदाबाद (म.मो.) 1-7 अप्रैल के अंकों में आपने पढ़ा था कि कैसे स्थानीय राजकीय महिला महाविद्यालय की प्रिंसिपल भगवती राजपूत ने लाखों रुपये की कॉलेज की लकड़ी वन विभाग और अपने कार्यालय अधीक्षक के साथ मिलकर बेच दी। इसकी शिकायत जब एक कर्मचारी द्वारा सी.एम. विंडो पर की गयी और वहां से रिपोर्ट मांगी गयी तो प्रिंसिपल ने लीपा-पोती करने के लिये पांच प्रोफ़ेसरों की एक जांच कमेटी गठित कर दी। कमेटी ने न सिर्फ़ कॉलेज के कार्यालय अधीक्षक चमन लाल को दोषी पाया बल्कि वन विभाग व कॉलेज की प्रिंसिपल को भी इस चोरी में हिस्सेदार पाया। जांच कमेटी की रिपोर्ट प्रिंसिपल की झूठ के साथ 8 मार्च 2018 को उच्चतर शिक्षा विभाग को भेजी जा चुकी है और तब से वहां दफनाये जाने के इन्तजार में पड़ी है।

उधर मजबूरी में यह रिपोर्ट तो मय सबूतों के अपने बचाव जवाब के साथ, प्रिंसिपल ने ऊपर भेज दी लेकिन यहां कॉलेज में उसने उन गरीब दिहाड़ी कर्मचारियों को हड़काना शुरू किया जिन्होंने उसके खिलाफ़ गवाही दी थी क्योंकि जांच कमेटी के प्रोफ़ेसरों का तो वह कुछ बिगाड़ नहीं सकती थी। कभी उनको डांटना तो कभी उनके काम में झूठी कमी बताकर लिखित जवाब मांगना। अब पता चला है कि 21 अप्रैल से उन सभी गरीब कर्मचारियों को हटा कर 10 नये कर्मचारी लगा दिये गये हैं। हालांकि पिछले कर्मचारियों के काम से सभी स्टाफ़ व छात्रायें खुश थे। पर बीजेपी के राज में काम किसे चाहिये ? काम के आधार पर ही निर्णय हो तो अब तक डॉ. भगवती, चमन लाल क्लर्क और वन विभाग का डी.एफ़ ओ तीनों ही जेल में होते। बताया जाता है कि डॉ भगवती ने 21 तारीख को इन कर्मचारियों को बुलाकर कहा कि सोमवार 23 तारीख से तुम्हारे में से कोई भी कॉलेज में दिख गया तो उसे पुलिस से पकड़वा दूंगी। इसे कहते हैं उल्टा चोर कोतवाल को डांटे।

इस बीच पता चला है कि प्रिंसिपल डॉ. भगवती राजपूत ने नये कर्मचारियों को लगाने की अनुमति देने के बदले में कुछ वसूली भी की है। ठेकेदार को शायद यह रिश्वत इसलिये देनी पड़ी होगी क्योंकि पुराने कर्मचारी उस पर दुबारा लगने के लिये दबाव बनाये हुये थे। रिश्वत देकर लेबर सप्लाई करने वाले ठेकेदार अपने कर्मचारियों को क्या दिहाड़ी देगा ये जानते हैं सब, लेकिन लेबर डिपार्टमेंट न्यूनतम वेतन न देने पर कोई कार्यवाही करेगा इसमें पूरा सन्देह है।

एक तरफ़ तो प्रिंसिपल भगवती इस लूट खसोट में लगी थी और दूसरी तरफ़ वन विभाग भी इसमें उनका पूरा सहयोग करता दिखायी दे रहा है। उसकी हालात तो अपनी बेटी से बलात्कार करने वाले बाप जैसी है। अपनी बन संपदा को नष्ट होने से बचाने की बजाय वो न सिर्फ़ नष्ट करने वालों से सौदेबाजी में लगा था बल्कि उन लोगों को डरा धमका भी रहा था जो इसे बचाने की कोशिश कर रहे थे। सबसे पहले तो जब तेजराम चौकीदार ने जनवरी में कॉलेज में पेड़ काटने की शिकायत डी.एफ़.ओ से की तो उसे डांट डपट कर भगा दिया गया। फ़िर जब सी.एम. विंडो की शिकायत पर उनसे जवाब तलब किया गया तो किसी बुध राम को कॉलेज में जांच के लिये भेजा गया। जांच तो इस बुध राम ने क्या करनी थी क्योंकि जो चीज़ खुले में पड़ी नज़र आ रही हो उसमें और क्या जांच। सो ये महाशय मुख्य चोर चमन प्रकाश से साथ बैठ चाय पी उससे थोड़ी और वसूली कर और फ़िर उल्टा विसब्लोअर तेजराम को धमका डरा कर वापिस आ गये।

तो ये है एक शिकायत का सी.एम. विंडो तक का सफ़र और उसका हश्र- यानी कार्यवाही के नाम पर ठेंगा। हां अगर जांच रिपोर्ट में कॉलेज के प्रोफ़ेसर चमन प्रकाश और भगवती और वन विभाग की संलिप्तता को न उजागर करते तो बेचारे चौकीदार का मारा जाना तय था। सवाल यह है कि आखिर ऊपर तक और कई विभागों तक में इस रिपोर्ट पर कार्यवाही को किसने रोका ? दोनों कॉलेजों में यह आम चर्चा है कि क्लर्क चमन प्रकाश ने स्थानीय विधायक और मंत्री विपुल गोयल को जाति का हवाला देकर पटाया तो प्रिंसिपल भगवती ने केन्द्रीय मंत्री कृष्णपाल गूजर के पांव पकड़ कर मदद करने की अपील की। और उन्होंने मदद की थी यह इसी बात से जाहिर है कि सी.एम. विंडो पर की गयी शिकायत पर तीन महीने बाद भी कुत्ते मूत रहे हैं।

तो क्या गरीबों को कोई न्याय नहीं मिलेगा ? उनकी कोई सुनवाई नहीं होगी ? धैर्य रखिये जनाब और 'कठुआ' के सबक को याद रखिये। न्याय और सच्चाई के साथ इस देश की जनता अब भी खड़ी है। उसके आगे सभी मंत्रियों-संत्रियों को मुंह की खानी पड़ेगी क्योंकि अभी यहां बहुत लोगों का जमीर जिन्दा है।

सरकारी कॉलेजों की कहानी चमन प्रकाश मंगला की माफ़र्त

इस सारे लूट कांड का मुख्य कर्मचारी है चमन प्रकाश मंगला-उप अधीक्षक राजकीय महिला महाविद्यालय फ़रीदाबाद। इन महाशय ने अपनी सारी जिन्दगी फ़रीदाबाद के दो कॉलेजों में ही बिता दी। किसी भी लूट-पाट कांड का किस्सा अधूरा है यदि उसमें चमन प्रकाश का नाम नहीं आया। प्रिंसिपल डॉ. भगवती राजपूत क्योंकि यहां प्राध्यापक रहकर गई थी और इसलिये वह उसकी काबलियत को अच्छी तरह जानती थी। इसलिये जब 29 दिसम्बर 2017 को वह यहां प्रिंसिपल बन कर आयी और चमन ने उसे लकड़ी बेचने का प्लान समझाया तो वह उसमें तुरन्त शामिल हो गई। और आप देख लीजिये चमन प्रकाश की काबलियत कि घटना के 4 महीने बाद भी कोई कार्यवाही दोषियों पर हुई हो तो। हां विसल ब्लोअर जरूर निकाल बाहर कर दिये गये।

इसमें पहले चमन प्रकाश सभी दिहाड़ी कर्मचारियों से 2000 रुपये प्रति व्यक्ति प्रति महीना वसूलने का दोषी भी पाया जा चुका है। जिस पर कई प्रोफ़ेसरों ने जब इसे धमकाया तो इसने उनके कुछ पैसे वापिस कर दिये। उस टाईम इसको बचाने में एक प्रोफ़ेसर का हाथ था जो अब रिटायर हो चुके हैं। उनका जिक्र अलग से है।

इसके अलावा इन दोनों कॉलेजों में नकल का ठेका भी सालों से इसी के नाम रहा है। हर छात्र/छात्रा से 5000 रुपये लेकर नकल करवाना इसका जन्मसिद्ध अधिकार रहा है। हां इसमें से हिस्सा वह प्रिंसिपल और कई प्राफ़ेसरों को पूरी ईमानदारी से देता रहा है।

इसके अन्य कामों में छात्राओं से पैसे वसूलने के लिये यूनिवर्सिटी में उनके रोल नं. रुकवा देना, प्रोफ़ेसरों के काम चंडीगढ निदेशालय में रुकवाकर फ़िर उनसे पैसे लेकर करवा देना भी शामिल है।

इसके अलावा रात को कुछ पुलिस वालों को कॉलेज में बुलाकर शराब पिलाने व वेश्यावृत्ति करवाने में भी इसका नाम आ चुका है। इन्हीं कारणों से कॉलेज के सी.सी.टी.वी कैमरे भी वह ज़्यादातर बन्द रखवाता है। एक महिला सफ़ाई कर्मचारी से इसके सम्बन्धों की भी काफ़ी चर्चा रही जो इस कारण और किसी की न सुनती थी, न काम करती थी। इस पर कुछ महिला प्रोफ़ेसरों ने ही उसके खिलाफ़ मोर्चा संभाला और उसे निकाल बाहर किया।

चमन प्रकाश जी एक ही जाति का होने का हवाला देकर आजकल मंत्री विपुल गोयल को पटाये हुये हैं और उनकी छत्रछाया में गुलछर्रे उड़ा रहे हैं।

एक प्रोफ़ेसर साहब हैं जो वैसे तो रिटायर हो चुके हैं लेकिन अपनी चौधराहट दिखाने, निकम्मे और भ्रष्ट लोगों को बचाने ऐसे दौड़े चले आते हैं जैसे कृष्ण द्रोपदी के चीर हरण पर मदद को आये थे। ये साहब भी कहते फ़िर रहे हैं कि मेरे रहते भगवती और चमन का कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। हे भगवान तुम मदद करने भी आये तो किसकी ?

8 डॉक्टरों के विरोध के बावजूद नर्स सुषमा पुनः प्रसूति वार्ड में

फ़रीदाबाद (म.मो.) अक्तूबर 2017 में स्थानीय बीके अस्पताल की नर्स सुषमा वर्मा को 18000 रुपये की रिश्वत लेते खुद सीएमओ गुलशन अरोड़ा ने पकड़ा था। उसके विरुद्ध कोई कानूनी कार्यवाही करने की अपेक्षा सीएमओ ने मात्र उसका तबादला प्रसूति वार्ड से आपातकालीन वार्ड में कर दिया था। लेकिन अब 20 अप्रैल को सीएमओ द्वारा जारी एक आदेश के द्वारा न केवल सुषमा वर्मा को वापस प्रसूति वार्ड में तैनात कर दिया बल्कि रिश्वतखोरी में उसकी सहयोगी बलजीतकौर को भी इसी वार्ड में लगा दिया।

सीएमओ की इस कार्यवाही के विरोध में 8 महिला (गायनी) डॉक्टरों ने बाकायदा लिखित में ज्ञापन दिया है। इन महिला डॉक्टरों ने अपने विरोध पत्र में साफ़ लिखा है कि सुषमा महाभ्रष्ट नर्स है। इसने पहले भी उसने सारे वार्ड को बदनाम कर रखा था और अब फ़िर वही लेन-देन का कारोबार यहां शुरू कर देगी। इससे न केवल वार्ड की बल्कि पूरे बीके अस्पताल की बहुत बदनामी होगी।

विदित है कि इस अस्पताल में गायनी यानी महिला रोग की कुल 9 डॉक्टर है। इनमें से केवल एक संगीता अग्रवाल ने इस नर्स का विरोध नहीं किया। जाहिर है यह नर्स डॉक्टर संगीता अग्रवाल को माफ़िक आती है, क्योंकि उनका भी धंधा लेन-देन का ही है। जानकार बताते हैं कि सुषमा वर्मा इस वार्ड में तैनाती के दौरान 4-5 लाख की लूट कमाई हर माह कर लेती है। इतनी बड़ी रकम अकेली एक नर्स को तो कौन हजम कर लेने देगा। यह तभी हजम की जा सकती है जब उसे यहां तैनात करने वाले सीएमओ को भी यथोचित हिस्सा दिया जाय।

यानी सीएमओ का हिस्सा-पत्ती में खुली रिश्वत का बाज़ार गर्म है, मुख्यमंत्री खट्टर और स्वास्थ्य मंत्री विज लाख ईमानदारी का ढोल पीटते रहें। एक बात और भी समझने की है कि जिस प्रकार एक नर्स 4-5 लाख की लूट अकेली हजम नहीं कर सकती, उसी प्रकार सीएमओ गुलशन अरोड़ा भी लाखों की मंथली लूट अकेला हजम नहीं कर सकता। इसमें भी सरकार चलाने वालों की हिस्सा-पत्ती से इन्कार नहीं किया जा सकता।

कनाडा में डॉक्टरों ने किया वेतन वृद्धि का विरोध

कनाडा में डॉक्टरों के वेतन में वृद्धि की गई है, जिसके कारण वहां के डॉक्टर इस वेतन वृद्धि का विरोध कर रहे हैं। उनका मानना है कि उनके वेतन पहले से ही अधिक हैं। उनके वेतन वृद्धि की कोई जरूरत नहीं है। उनकी मांग है कि उनके वेतन वृद्धि को रद्द किया जाए और इस धन को स्वास्थ्य सेवा से जुड़े क्लर्क व अन्य कर्मचारियों, नर्स व जरूरतमंद मरीजों में आबंटित किया जाए।

यह खबर वैसे तो मार्च शुरू की है, जब यह तमाम अखबारों की सुर्खियां बना था। सिर्फ अपने यहां ही नहीं बल्कि हर तरफ, आये दिन अस्पतालों और डॉक्टरों को पैसे के पीछे अंधी दौड़ लगाते देखने को अभिशप्त समय में यह खबर एक ठंडी फुहार की तरह है और दर्शाती है कि मानवीयता व संवेदना कभी खत्म नहीं हो सकती।

स्वयं की पहचान करें

आज के युग की मुख्य समस्या है तनाव। तनाव भी ऐसा कि इसने सभी आयु वर्गों को अपनी गिरफ्त में ले लिया है। आज के युग में एक छोटा सा बालक भी तनाव ग्रस्त है और इसके कारण वह शारीरिक समस्या का शिकार है। प्राय: देखा जा रहा है आज कल छोटे-छोटे बच्चे भी मोटापे का शिकार हैं। यह परेशानी कहां से एवं क्यों आ रही है ?

इसका मूल कारण है, हम स्वयं को नहीं पहचानते। हम सब प्राय: अपने आपको पहचान ही नहीं पाते क्योंकि हमें अपने अंदर छिपे गुणों और क्षमताओं के विषय में पता ही नहीं होता और भागदौड़ भी केवल मात्र सफल जीवन पाने के लिये होती है। संस्कृत में एक श्लोक है:-अमन्त्रक्षरं नास्ति, नास्ति मूलमनौषधम्। अयोग्य: पुरुषे नास्ति, योजकस्तत्र दुर्लभ:।

अर्थात कोई भी अक्षर ऐसा नहीं है जो मंत्र न हो, कोई भी ऐसी वनस्पति नहीं है जो औषधि न हो, परंतु उन सभी को समझकर काम में लाने वाले अति दुर्लभ हैं।

क्या इसका कारण आज की वर्तमान शिक्षा प्रणाली हो सकती है ? इसकी कमियों को ढूंढना भी हम शिक्षाकर्मियों का ही कर्त्तव्य है कि शिक्षा प्रणाली में आए विकारों को दूर करें तथा विभिन्न प्रकार के क्रियाकलापों को पाठ्यक्रम में शामिल कर बच्चे को पहचानने का प्रयास करें कि वह छात्र कौन से फल का बीज है तथा उसके जीवन में किस प्रकार के तत्वों की आवश्यकता है। हमें यह जानना होगा कि हमारे जीवन में आने वाली कठिनाई के लिये हमें किस प्रकार के औज़ारों की आवश्यकता है।

ऋषिपाल चौहान
चेयरमैन
जीवा पब्लिक स्कूल